I2OR Impact Factor : 3.250 ISSN 2349-364X

वेदाञ्जली Vedanjali

अन्तर्राष्ट्रीय विद्वत्समीक्षित षाण्मासिकी शोधपत्रिका

(International Peer Reviewed Refereed Journal of Multidisciplinary Research)

वर्ष-८ अंक-१५, भाग-४ जनवरी-जून, २०२१

प्रधान सम्पादक
डॉ० रामकेश्वर तिवारी

सह सम्पादक
श्री प्रसून मिश्र

प्रकाशन : वैदिक एजूकेशनल रिसर्च सोसाइटी, वाराणसी

संरक्षकद्वय

जगत्‌शिष्य पं. शिवपूजन चतुर्वेदी

श्री नरवट वॉयस (जर्मनी)

प्रधानसम्पादक

डॉ0 रामकेश्वर तिवारी

सह सम्पादक

श्री प्रसून मिश्र

सम्पादक मण्डल

प्रो0 उमाकान्त चतुर्वेदी

प्रो0 ब्रजभूषण ओझा

प्रो0 रंजन कुमार त्रिपाठी

डॉ चन्द्रकान्त दत्त शुक्ल

शोध पत्र–समीक्षक मण्डल

- डॉ0 उमापति मिश्र, अतिथि अध्यापक, वेद विभाग, का0हि0वि0वि0, वाराणसी
- डॉ0 पवन कुमार यादव, सहायकाचार्य, दर्शन, सी0एम0पी0 डिग्री कॉलेज, प्रयागराज
- डॉ0 चिरंजीवी अधिकारी, सहायक आचार्य, व्याकरण, कु0भा0व0स0पु0अ0 विश्वविद्यालय, असम
- डॉ0 निर्भय कुमार पाण्डेय, सहायकाचार्य, ज्योतिष, रामाधीन मिश्र भा0स0म0 देवढ़िया, बक्सर
- डॉ0 नीरज तिवारी, सहायकाचार्य, साहित्य, राष्ट्रिय संस्कृत संस्थान, लखनऊ परिसर, लखनऊ
- डॉ0 नन्दकिशोर तिवारी, सहायकाचार्य, व्याकरण, राष्ट्रिय संस्कृत संस्थान, भोपाल परिसर, लखनऊ
- डॉ0 रविशंकर पाण्डेय, सहायकाचार्य, संस्कृतविद्या विभाग, स0स0वि0वि0, वाराणसी
- डॉ0 सुनील कुमार तिवारी, सहायकाचार्य, हिन्दी, शहीद भगत सिंह कॉलेज, दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली
- डॉ0 अशोक राम, असि0प्रोफेसर, भूगोल विभाग, एस0एन0 सिन्हा कॉलेज, वार्सलिगंज, बिहार
- डॉ0 शशिकान्त तिवारी, सहायक आचार्य (दर्शन), महर्षि वाल्मीकि संस्कृत विश्वविद्यालय, कैथल, हरियाणा

परामर्शदात्री समिति

प्रो0 बाल शास्त्री	प्रो0 रमेशचन्द्र पण्डा
प्रो0 हरेराम त्रिपाठी	प्रो0 मुरली मनोहर पाठक
प्रो0 हरीश्वर दीक्षित	प्रो0 श्रीपति त्रिपाठी
प्रो0 संतोष शुक्ल	डॉ0 कामेश्वर उपाध्याय
डॉ0 राजीव रंजन तिवारी	श्री जय प्रकाश चतुर्वेदी

प्रकाशन तिथि : 15/05/2021

सम्पर्क सूत्र

श्री अंकित दुबे

दूरभाष : 9473531601

Website : vedanjalijournal.com / e-mail : vedanjali2014@gmail.com

---

विशेष : पत्रिका के किसी भी प्रकार की समस्या के समाधान का अधिकार संरक्षकों के पास स्थायी रूप से सुरक्षित है तथा लेखकों के शोध–पत्र उनके अपने विचार हैं, पत्रिका परिवार उनके विचारों से सहमत हो यह आवश्यक नहीं है।

- इक्कीसवीं सदी के हिन्दी उपन्यासों में चित्रित बाज़ारवाद 123–126
  विपिन विक्रम सिंह
- आत्मबोध से अंतरतम की यात्रा और महुआचरित 127–129
  अभिषेक कुमार यादव
- मतदान व्यवहार में शिक्षा की भूमिका 130–134
  श्री आजाद यादव
- कवि जगदीश प्रसाद सेमवाल के विलास काव्यों में नदी वर्णन 135–138
  अमित नौटियाल व कमला चौहान
- कापिलतन्त्रे सत्कार्यवादविमर्शः 139–143
  अमितसरकारः
- "राघवेन्द्रचरितम्" महाकाव्य की प्रेरक सूक्तियाँ 144–146
  अंकिता त्रिपाठी
- साम्प्रतिकसमाजे सूर्यनमस्कारस्योपादेयता 147–148
  भोलेश्वरप्रधानः
- महाकवि कालिदास के काव्यों में प्रकृति–चित्रण 149–151
  दीपक शर्मा
- कश्मीरशैवदर्शनस्य सामान्यपरिचयः 152–156
  डॉ0 चन्द्र किशोर
- वेदस्यैतिह्यम् 157–163
  वाचस्पतिः डॉ0 देवेन्द्रप्रसादमिश्रः
- नागरिक प्रतिबद्धता का सवाल समकालीन कविता में 164–167
  डॉ0 दिनीमोल एन0डी
- वैदिकी विदुषी 168–171
  डॉ0 गौतमजानाः
- वैदिक मानवीय मूल्यों की वर्तमान में प्रासंगिकता 172–175
  डॉ0 हरेती लाल मीना
- मयमतदृशा दिक्साधनविधिः 176–180
  डॉ0 के0टि0वि0 राघवन्
- मध्यकालीन कवि वृंद की आर्थिक नीति की प्रासंगिकता 181–184
  डॉ0 ललिता मीणा
- उपनिषदों में जीवब्रह्मैक्य–एक विवेचन 185–189
  डॉ0 मधु श्रीवास्तव
- कवि श्रीनिवासरथ की कविता में सामाजिक–चेतना
  ('तदेव गगनं सैव धरा' के सन्दर्भ में) 190–192
  डॉ0 प्रीति वर्मा
- बौद्धदर्शनस्य प्रमुखसम्प्रदायानाम् परिचयः 193–196
  डॉ0 पूजा
- अभिराज की कविता में दाम्पत्य और प्रेम 197–200
  डॉ0 राजकुमार मिश्र
- मनुमते जगतः सृष्टिविषये लोकोपयोगिताः 201–202
  Dr. Sitansubhusan Panda

वेदाञ्जली, An International Peer Reviewed Refereed Research Journal
वर्ष-८, अंक-१५, भाग-४, जनवरी-जून, २०२१ | ISSN : 2349-364X | I2OR Impact Factor : 3.250

वेदस्यैतिह्यम्

वाचस्पतिः डॉ. देवेन्द्रप्रसादमिश्रः*

चत्वारि वाक् परिमिता पदानि तानि विदुर्ब्राह्मणा ये मनीषिणः।
त्रीणि निहिता नेङ्गयन्ति तुरीयं वाचो मनुष्या वदन्ति।।"[1]

सूक्ष्मातिसूक्ष्मज्ञानमेव परावाक्। तत् ज्ञानमेव वेदः ऋषय एव वेदवाण्या, साक्षात्कर्तारः। तेन ते ऋषयः कथ्यन्ते। यथा - **ऋषयो मन्त्रद्रष्टारः। ऋषिः दर्शनात्।**[2]

परमेश्वरस्य मुखारविन्दात् निर्गतशब्दराशिरेव वेदः। यथा -

यस्य निःश्वसितं वेदा यो वेदेभ्योऽखिलं जगत्। निर्ममे तमहं वन्दे विद्यातीर्थं महेश्वरम्।।[3]

पुराणेषु उल्लिखितं ब्रह्मैव वेदेषु प्रजापतिः इति। संस्कृतसाहित्ये वेदानां स्थानं सर्वोपरि वर्तते। भारतीयदर्शनस्य धर्मस्य संस्कृतेश्च जीवनं वेदा एव सन्ति। आर्याणां सभ्यता संस्कृतिश्च वेदानेवाधारीकृत्य विराजते। वेदाः न केवलं भारतीयैरपि तु वैदेशिकैः विद्वद्भिरपि स्वीकृता अवलोकितास्सन्ति। तस्यानुसन्धातृभिर्महर्षिभिरनुभूतस्य परमतत्वस्य बोधयितारो भूत्वा भुवि ते विभान्ति। भारतीयपरम्परानुसारेण वेदास्त्वपौरुषेयाः सन्त्येव। अतिप्राचीनकालादेवेष्टप्राप्तिरनिष्टपरिहृतेश्चालौकिका उपायस्तेभ्य एव विदिता जायन्ते। वेदेषु ज्ञानविज्ञानधर्मदर्शनसदाचारसंस्कृतिनैतिकसामाजिकराजनैतिकप्रभृतीनां जीवनोपयोगिविषयाणां सन्निवेशोऽस्ति। प्रत्यक्षस्य न चानुमानस्य प्रवेशस्तत्रापि ते प्रविशन्ति। स्मृतिपुराणादीनां मान्यत्वं तदनुगामित्वमेवावतिष्ठते।

एतान् विश्वकोष एव मन्यन्ते विद्वांसः। वेदास्त्वस्माकं श्रेयःप्रेयःप्रभृतीनां साधनमस्ति। प्राचीनानि धर्मसमाजव्यवहारप्रभृतीनि वस्तुजातानि बोधयितुं श्रुतयः एव क्षमन्ते। वेदास्तु धर्ममूलतैव सर्वथा समादृताः सन्ति। अतिप्राचीनमिदं वैदिकवाङ्मयं तथाऽपि आधुनिका इतिहासविदः देशिकाः वैदेशिकाश्च तेषां कालनिर्धारणे बद्धादराः। यथा- लोकमान्यतिलकमहोदयो यद्गणिताधारेण वेदानां ६००० ई.पू. निर्मितत्वम्, ततोऽपि वा पूर्वकालिकत्वं निर्धारितवांस्तत्र नास्ति सन्देहस्यावकाशः, वेदानां रचनायां जातायां तद्व्याख्यानभूता ब्राह्मणग्रन्थाः अरच्यन्त। ब्राह्मणग्रन्थेभ्यः पश्चात् आरण्यकानि तदनन्तरमुपनिषदस्ततो रामायणमहाभारतादिकं लौकिकसाहित्यानि चेति।

अतिव्यापकं विस्तृतञ्चेति वैदिकवाङ्मयम्। स चापौरुषेयो वेदश्चतुर्विधः - ऋग्वेदो यजुर्वेदः सामवेदोऽथर्ववेदश्च। तत्र छन्दोबद्धा मन्त्रा ऋचः। छन्दोहीना गद्यात्मका अर्थवशेन विभज्यमाना मन्त्राः यजुष्पदवाच्याः। ऋक्षुगीयमानो गानविशेषः सामपदाभिधेयः। छन्दोबद्धा ऋग्विशेषा एव अथर्वाङ्गिरसमन्त्राः। इदं सर्वाङ्गपूर्णम्, यतोऽत्र मानवजीवनोद्देश्यभूताः धर्मार्थकाममोक्षाख्याश्चत्वारोऽपि पुरुषार्थाः विवेचिताः। अस्य हि वाङ्मयस्य वयोवर्षिष्ठत्वेन महामहीखण्डमण्डलव्यापित्वेन दुष्परिच्छेदेन परिमाणेन निरतिशयेन वैभवेन अनन्यतुल्यत्वेन सौन्दर्यप्रकर्षेण संस्कृतातिव्रतोपयोगिना गुणेन च महति मौलिकपुरातने च वैदिकवाङ्मयेऽस्मिन् अस्मदभिनिवेश सर्वथा खलु समर्थ्यते। भारतीयसाहित्येतिवृत्तं तावत् वैदिककालः लौकिकसंस्कृतकालश्चेतिकालद्वयेन द्विधा विभज्यते।

पाणिनेः प्राक् प्रथमः कालः परतश्चापरः कालः गण्यते। आद्ये हि वेदाः ब्राह्मणानि आरण्यकग्रन्थाः उपनिषदः कल्पाश्चेति सारस्वतं समावेश्यते। विलक्षणा खलु सातत्यगतिरार्यसभ्यतायाः दरीदृश्यतेऽस्मिन् वैदिकवाङ्मये। प्रार्थनोपासनामन्त्रजपजननीजठरे शरीरग्रहणमारभ्याऽऽशरीरत्यागादार्यजीवनं विशिंषन्तः षोडशसंस्काराः अरणीभ्यां हव्यवाहो जननं श्रौतगृह्याणि बहूनि विध्यन्तराण्यपि च खीष्टात् बहुसहस्रवर्षपूर्वमेव विधिमनतिक्रम्यैव यावदद्य प्रवर्तन्ते। वेदास्त्वामूलमूलं धर्म्यप्रवृत्तिकम्। वेदानां परमोपादेयत्वात् अतिशयमहत्वशालित्वाच्च महर्षयस्तान् रक्षितुमपि पूर्वमुपायञ्चक्रुः। वेदा एतावद्दीर्घकालानन्तरमपि लोके

*सहाचार्यः वेदविभागस्य, श्रीलालबहादुरशास्त्रीराष्ट्रियसंस्कृतविश्वविद्यालयः (केन्द्रीयविश्वविद्यालयः), कुतुबसांस्थानिकक्षेत्रम्, नवदेहली

I2OR Impact Factor : 3.015

ISSN : 2395 - 5104

शब्दार्णव Shabdarnav

International Peer Reviewed Referred Journal of Multidisciplinary Research

Year 7 Vol. 13, Part-IV January-June, 2021

Scientific Research
Educational Research
Technological Research
Literary Research
Behavioral Research

Editor in Chief
DR. RAMKESHWAR TIWARI

Executive Editors
DR. KUMAR MRITUNJAY RAKESH
MR. RAGHWENDRA PANDEY

Published by
SAMNVAY FOUNDATION
Mujaffarpur, Bihar

I2OR Impact Factor : 3.015 ISSN - 2395-5104

शब्दार्णव

Shabdarnav

An International Peer Reviewed Refereed Journal of Multidisciplinary Research

Year-7 Vol. 13, Part-IV January-June 2021

Scientific Research
Educational Research
Technological Research
Literary Research
Behavioral Research

28.7.23

Dr. Devendra Prasad Mishra
Associate Professor - Veda
Shri Lal Bahadur Shastri Rashtriya Sanskrit University
(Central University)
Ministry of Education, Govt. of India
B-4, Qutub Institutional Area, New Delhi - 16

Editor in Chief
DR. RAMKESHWAR TIWARI

Executive Editors
Dr. Kumar Mritunjay Rakesh
Mr. Raghwendra Pandey

Published by
Samnvay Foundation
Mujaffarpur, Bihar

- कमलेश्वर के कथा साहित्य में धार्मिक, सांस्कृतिक तथा राजनीतिक परिवेश का चित्रण 123–126
  डॉ0 योगेश चन्द्र यादव व हरिलाल यादव
- अशुभ की सत्ता एवं दुःखों का निवारण बौद्ध दर्शन में 127–131
  Narendra Kumar Sonkar
- अरुण कमल की समकालीन कविता का स्वरूप तथा परम्परा 132–136
  विपिन विक्रम सिंह
- अधिकालिदासीयं यज्ञनिबन्धना विश्वव्यवस्था 137–139
  विद्यावाचस्पतिः डॉ0 देवेन्द्रप्रसादमिश्रः
- राजनीतिक अभिवृत्ति, राजनीतिक सहभागिता एवं शिक्षा 140–144
  श्री आजाद यादव
- श्रीमद्भागवते षष्ठस्कन्धेऽद्वैतदर्शनपरवाक्यानां समीक्षणम् 145–148
  अमितसरकारः
- वैश्विकपर्यावरणसमस्यायाः वेदेषु समाधानम् 149–153
  अंजलि आर्या
- गर्भावस्था के दौरान योगनिद्रा व गर्भसंस्कार की महत्ता का समीक्षात्मक अध्ययन 154–158
  आयुष आचार्य व डॉ0 शालिनी
- ऋषि दयानन्द की गुरुवर विरजानन्द से प्रथम भेंट तथा दीक्षा 159–161
  दीपक शर्मा
- वर्तमान परिप्रेक्ष्य में फणीश्वरनाथ रेणु के साहित्य का आलोचनात्मक विश्लेषण 162–164
  डॉ0 अरविन्द कुमार उपाध्याय
- काश्मीरशैवदर्शनस्य प्रमुखसिद्धान्तानां निदर्शनम् 165–167
  डॉ0 चन्द्र किशोर
- भाट्ट मतानुसार : उपमान प्रमाण की मीमांसा 168–171
  डॉ0 हरेती लाल मीना
- प्रेमचंद की रचनाएँ : एक सारगर्भित दृष्टि 172–175
  डॉ0 हरमीत सिंह
- श्री अरविन्दो का शैक्षिक दर्शन 176–177
  डॉ0 हेमलता पाठक
- वैदिक वाङ्मय में मोक्ष की अवधारणा 178–181
  डॉ0 कृष्ण कुमार
- भीष्म साहनी और यथार्थवाद 182–187
  डॉ0 ललिता मीणा
- व्याकरणशास्त्रे फिट्सूत्राणाम् उपादेयता 188–190
  डॉ0 लीलाधर भट्टराई
- मीडिया : जनसंपर्क और लोकसेवा 191–194
  डॉ0 मंजु रानी
- भारतीय ज्योतिष की वैज्ञानिकता एवं उपयोगिता 195–200
  डॉ0 नवीन शर्मा

Shabdarnav : *An International Peer Reviewed Refereed Research Journal* | ISSN - 2395-5104
वर्ष–7, अंक–13, भाग–4, जनवरी–जून, 2021 | I2OR Impact Factor : 3.015

अधिकालिदासीयं यज्ञनिबन्धना विश्वव्यवस्था

विद्यावाचस्पतिः डॉ. देवेन्द्रप्रसादमिश्रः*

इदं सुप्रसिद्धं यत् किमपि साहित्यं न विश्वकल्याणमतिरिच्य स्वकीयमवदातमुद्देश्यं परिकल्पयति। विश्वम्भरा हि राजानः कवयः मनीषिणः किं वा देवा अपि अत्र वासिनां कल्याणमुरसीकृत्य एव अजस्रं यतन्ते। तत्र कविपरम्परासु धुरिस्थानं चकासदयं कालिदासः कथं न विश्वकल्याणं चिन्तयेदिति। मन्येऽहं नूनमेव तस्य प्रमुखं कर्म विश्वकल्याणचिन्तनमिति। अद्यत्वे कालिदाससाहित्यसमुदीरितं विश्वकल्याणोपायं विचारयामः।

कविश्चायं कालिदासः स्वकीयेषु ग्रन्थेषु सर्वत्रापि विश्वसंरक्षणस्याप्युपायान् चिन्तयति। इदमवधेयं यत् पृथिव्यप्तेजोवाय्वाकाशपञ्चभूतानां सम्यक् संरक्षणेनैव विश्वस्य व्यवस्था जागर्ति। तत्रैव सुखेन वसन्तः प्राणिन ऐहिकं पारलौकिकञ्च ससुखं साधयन्ति सिद्ध्यन्ति च। अद्यत्वे तु जगति बहुत्र स्थले तादृशं कष्टमनुभूयते यत्र प्रकृतिः प्रकुपिता तेन प्रतिपदमुपप्लवाः दुःखाय परिकल्पन्ते। विचारणीयं हि यावदस्य संसारस्योपादानं सुष्ठुभावं न पद्यते तावत् तु सुखस्य कल्पनापि अशक्या। सम्प्रति वैज्ञानिका अनेकान् आधुनिकान् आविष्कारान् प्रकल्पयन्ति परमद्यावध्यपि केनापि विश्वस्य सुखसंरक्षणव्यवस्थाया आविष्कारा न कृताः। अहं तु मन्ये यद् वृष्टिः सम्यक् स्यात् तेन वायोराकाशस्यापि परिशोधनं सुतरां जायते। तेन वृष्टिरेव पञ्चभूतानां नियामकत्वेन स्वकीयं स्थानमाधत्ते। एषा ह्यत्यन्तं वैज्ञानिकी प्रक्रिया तदेव भाविद्रष्टायं कालिदासः सर्वत्रापि वृष्टेः प्रामुख्यं मन्वानो यज्ञविद्यां ससम्मानमादृणाति। अतः कालिदासीयं मतमेवाकलयामः यत् यज्ञमन्तरा न हि विश्वस्य कल्याणस्य कथमपि सर्जना व्यवस्थापनं च प्रकल्पयितुं शक्यते। तदेव तेनाभिज्ञानशाकुन्तलस्य मङ्गलाचरण एव 'या सृष्टिः'[1] इत्यादिपदेन अष्टमूर्तयः प्रार्थिताः। हविर्होत्री इत्यादिरूपेण तासां प्राधान्यमपि परिकल्पितम्। तथैव रघुवंशेऽपि-

यथाविधिहुताग्नीनां यथाकामार्चितार्थिनाम्। यथाऽपराधदण्डानां यथाकालप्रबोधिनाम्॥[2]

इत्यत्र यथाविधिहुताग्नीनामित्यस्य प्रमुखं कर्म निदर्शितम्। एवमेव यज्ञपरम्परायाः संरक्षणार्थं कल्पितसिंहायात्मानमप्यर्पयामास। तदेवाह कालिदासः -

मान्यः स मे स्थावरजङ्गमानां सर्गस्थितिप्रत्यवहारहेतुः। गुरोरपीदं धनमाहिताग्नेर्नश्यत्पुरस्तादनुपेक्षणीयम्॥[3]

अस्मिन्नपि पद्ये सकलस्यापि सुखस्य कारणभूतं यज्ञमेव कालिदासः सूचितवान्। अत एव सर्गस्थितप्रत्यवहारहेतुरित्यादिपदमुपात्तम्। अपि चात्यन्तं स्पष्टमुक्तवान् यत्-

हविरावर्जितं होतस्त्वया विधिवदग्निषु। वृष्टिर्भवति सस्यानामवग्रहविशोषिणाम्॥[4]

इयञ्च वृष्टिः न हि यज्ञमन्तरा कथमपि सम्भाव्यतेऽतः विश्वसंरक्षणाय यज्ञविधानमेव प्रकाममुपाय इति मनुते कालिदासः। किञ्च मनुनाप्येतत् प्रागेवाभिव्यक्तीकृतं तदेव मनुस्मृतौ पद्यमेतदुपलभ्यते-

अग्नौ प्रास्ताहुतिः सम्यगादित्यमुपतिष्ठते। आदित्याज्जायते वृष्टिर्वृष्टेरन्नं ततः प्रजाः॥[5]

तेन हविःकर्म सर्वैरनुष्ठेयमेव। अद्यत्वे चेत् सर्वकारोऽस्य विधानमवश्यंकरणीयतया नियोजयति। तेन सर्वमपि सुखं सेत्स्यति इत्यप्यभिव्यज्यते।

किञ्च वृष्टेर्वैगुण्याद् वायुरपि प्रदूषितो भवति। इयञ्चाव्यवस्था महती कष्टदायिनी। अद्यत्वे सर्वेऽपि महानगराण्येतत्कष्टेन पीडितानि सन्त्येव। अतो वायुसंशोधनस्योपायमपि वृष्टिसंशोधनमेव मन्ये। तदेव कालिदासोऽप्याह- **दिशः प्रसेदुर्मरुतो ववुः सुखाः प्रदक्षिणार्चिर्हविरग्निराददे।**[6] इत्यादिना।

दिशामपि प्रसन्नता वायुद्वारैव परिलक्ष्यते। अतः वायोः प्राणास्पदत्वं सर्वैः प्रकल्पितम्। किञ्च सर्वेषां मनोरथानां सिद्धिसूचकत्वं वायोरेव। तदेवाह कालिदासः:-

पवनस्यानुकूलत्वात्प्रार्थनासिद्धिशंसिनः। रजोभिस्तुरगोत्कीर्णैरस्पृष्टालकवेष्टनौ॥[7]

*प्राध्यापकः, वेदविभागस्य, श्रीलालबहादुरशास्त्रिराष्ट्रियसंस्कृतविद्यापीठम्, (मानितविश्वविद्यालयः), कुतबसांस्थानिकक्षेत्रम्, नवदेहली-110016

ISSN : 2582-9092

हरिद्रा

(सांस्कृतिक शोध का अन्ताराष्ट्रिय उपक्रम)

A Reviewed/Refereed Research Journal

जनवरी–मार्च 2022॥ त्रैमासिक | वर्ष 3 |अंक 8|इन्दौर

300रु.

Warli, Maharashtra

वर्ली, महाराष्ट्र

हरिद्रा

(सांस्कृतिक शोध का अन्तर्राष्ट्रीय उपक्रम)

ISSN : 2582-9092

त्रैमासिक | वर्ष: 3 || अंक: 8 | इन्दौर | जनवरी–मार्च 2022 | माघ–चैत्र | विक्रम संवत् 2079

बसंत अंक

मुख्य सम्पादक

अभिजीत त्रिपाठी

सम्पादक

डॉ. विकास दवे

मार्गदर्शक

महामहोपाध्याय पण्डितराज आचार्य मिथिला प्रसाद त्रिपाठी

(पूर्व कुलपति, महर्षि पाणिनि संस्कृत एवं वैदिक वि.वि., उज्जैन)

स्वर्ण पदक- एम.ए. संस्कृत/कला संकाय/एम.ए.हिन्दी, राष्ट्रीय पुरस्कार से सम्मानित- कालिदास अलंकरण पुरस्कार राष्ट्रपति पुरस्कार/साहित्य अकादमी पुरस्कार/ अखिल भारतीय सर्वभाषा पुरस्कार/कालिदास संस्कृतवती राष्ट्रीय पुरस्कार एवं महामहोपाध्याय, पण्डितराज, वैभवभूषण उपाधियों से अलंकृत

सम्पादक मण्डल

डॉ. दीपक शर्मा

(कुलपति, कुमार भास्कर वर्मा संस्कृत व पुरातन अध्ययन वि.वि., नलबारी आसाम)

E-mail : kbvsasun@rediffmail.com

डॉ. राजेश लाल मेहरा

(पूर्व प्रा. शा.कला एवं विज्ञान महा., रतलाम)

E-mail : profrajeshmehra441@gmail.com

प्रो. योशीफुमी मिज़ुनो

प्रोफेसर एवं अध्यक्ष – हिन्दी विभाग

(टोकियो युनिवर्सिटी ऑफ फोरेन स्टडीज़, टोकियो जापान)

E-mail : mizunoyo@tufs.ac.jp

प्रो. गणपति रामनाथ

(रेनेसेलर पोलीटेक्नीक इंस्टीट्यूट, ट्रॉय, न्यूयार्क, अमेरिका)

E-mail : ramanath@rpi.edu

डॉ. मंगल मिश्र

प्राचार्य, क्लॉथ मार्केट वाणिज्य महा. बड़ा गणपति, इन्दौर

E-mail : scmkvm.indore.mp@gmail.com

डॉ. अरूणा कुसुमाकर

(प्राचार्य शा. संस्कृत महाविद्यालय, रामबाग, इन्दौर)

E-mail : sanskritcollege.indore@gmail.com

28.7.23

Dr. Devendra Prasad Mishra
Associate Professor - Veda
Shri Lal Bahadur Shastri Rashtriya Sanskrit University
(Central University)
Ministry of Education, Govt. of India
B-4, Qutub Institutional Area, New Delhi - 16

सम्पर्क

महोपाध्याय पं. गणेशदत्त त्रिपाठी शैक्षणिक, धार्मिक, पारमार्थिक न्यास

३१८, प्रोफेसर कॉलोनी, सपना-संगीता रोड, इन्दौर (म.प्र.) ई-मेल : editor@haridrajournal.com

ISSN : 2582-9092

|| अनुक्रमणिका ||

क्रमांक	शीर्षक	लेखक	पृष्ठ संख्या
1.	राष्ट्र के पुनरुत्थान में भारतीय ऐतिहासिक साहित्य का योगदान	डॉ. मनीषा दीक्षित	03-07
2.	मध्य प्रदेश पर्यटन के क्षेत्र में संभावनाए और चुनौतियां: विदेशी पर्यटकों के संदर्भ में	डॉ. प्रकाश खमपरिया	08-12
3.	जैनधर्म का उद्भव और उसकी प्राचीनता	निदेशक– सुखदेव बाजपेयी शोधार्थी– कीर्ति सांधेलिया	13-17
4.	पुराणधर्मशास्त्रयोः वेदारम्भ–समावर्तन–संस्काराभ्यामादर्शजीवनस्वरूपम	कु. अपूर्वा अग्रवाल	18-24
5.	गौतमधर्मसूत्रे दायभागः–एका समीक्षा	डॉ बर्णाली बरठाकुर	25-28
6.	यजुर्वेदे यमसूक्तसमीक्षणम्	म.म.आचार्यो देवेन्द्रप्रसाद मिश्र	29-34
7.	ऋग्वेदीयाक्षसूक्तस्य सामाजिकमहत्त्वम	डॉ. प्रणवज्योति डेका	35-37
8.	भोज का व्याकरण एवं काव्यशास्त्रीय प्रदेय	डॉ. ज्योत्स्ना द्विवेदी	38-44
9.	**Status of Women Writers in Princely State of Travancore – A Study**	**Dr. Sapna O P**	45-49
10.	**Covid-19 and its impact on Technical Education in India with Specific Reference to Fashion and Interior Design Disciplines**	**Dr. Vijeta Bhatore** **Mrs. Afroz Adil**	50-58
11.	**Ākhyātavāda: A semantic study based on manuscript**	**Auth.1 - Swaraja Salaskar** **Auth.2 -Dr. Shweta Jejurkar**	59-65

यजुर्वेदे यमसूक्तसमीक्षणम्

म.म. आचार्यो देवेन्द्रप्रसाद मिश्रः

सारांशः – यमसूक्तं[1] यमदैवत्यानामृचां समुदायं यमसूक्तशब्दवाच्यम्। अस्मिन्नध्याये पितृमेधसम्बन्धिनो मन्त्रा उक्ताः सन्ति। पितृमेधः मृतस्य पितुः वर्षस्मरणे भवति। वर्षस्मृतौ विषमवर्षे पितृमेधो भवितुमर्हति। एकतारकनक्षत्रे चित्राप्रभृतिनक्षत्रेषु च अमावस्यायां तिथौ शरदृतौ ग्रीष्मे वा माघमासे वा भवति। पितृमेधं करिष्यता यजमानेन कुम्भेऽस्थिसंचयं विधातव्यम्। मृतपुरुषस्य यावन्तः पुत्रपौत्रप्रभृतयः परिजनाः सन्ति तावन्तः कुम्भाः कर्मकाण्डदिवसे आनेतव्याः। ततः अरण्ये कुम्भाः स्थापनीयाः। कुम्भेऽस्थिसंचयनं कृत्वा ग्रामसमीपे समानीय शय्यायां कुम्भं नवीनवस्त्रेण सर्वान् कुम्भान् विविधवाद्ययन्त्रेषु वाद्यमानेषु सर्वे परिवारजनाः मृतस्य कुम्भस्थितास्थिप्रदक्षिणं परिचरन्ति। तमस्थिकुम्भं गृहीत्वा ग्रामाद् बहिः स्नानभूमौ गत्वा श्मशानकर्म कुर्वन्ति। तत्र निखिलं श्मशानकर्म सम्पाद्य गृहमागत्य तं गृहेषूच्छ्रयेत्। एतदुच्छ्रयणं प्रजावृद्ध्यैः कार्यम्।

मुख्यशब्दानि – यजुर्वेदः, यमसूक्तम्, यमः गोभजः, देवता, जातवेदाः ।

अपेतो यन्तु पणयोऽसुम्ना देवपीयवः। अस्य लोकः सुतावतः।
द्युभिरहोभिरक्तुभिर्व्यक्तं यमो ददात्ववसानमस्मै ।2

असुराः राक्षसाः वा अत्र अस्थिस्थानात् दूरं गच्छन्तु। एते असुराः राक्षसा वा देवद्वेषकारकाः सन्ति। पणयः परद्रव्यापहरणकारकाः सन्ति। एतद् स्थानं सोमाभिषवकर्तॄणां यजमानानां निवासाय वर्तते। यमः अस्यामृतस्य पुरुषस्य निवासस्थानं ददातु। ऋतुभिः दिवसैः रात्रिभिश्च स्पष्टीकृतं निरन्तरं यमः सुखमस्मै मृताय पुरुषाय ददातु।

विशेषः – मृतपुरुषाय परलोके सुखं प्राप्नोतु एतदर्थं परिवारजनाः यमं प्रार्थयन्ते।

सविता ते शरीरेभ्यः पृथिव्यां लोकमिच्छतु। तस्मै युज्यन्तामुस्त्रियाः। ।3

ये केचित् मृतस्य पुरुषस्य सम्बन्धिनः वर्तन्ते ते सर्वे सवितारं याचन्ते। यथा सविता मृताय पुरुषाय सुखपूर्वकनिवासाय अवसानं ददातु। सविता तस्मै गमनाय यानं बलीवर्दयुक्तं ददातु। मया यत्र मार्गे गच्छता सः पुरुषः न किञ्चिदपि दुःखस्यानुभवं कुर्यात्।

विशेषः – सुखपूर्वकगमनाय साधनं बलीवर्दयुक्तयानं सविता ददातु एतदर्थं परिवारजना प्रार्थयन्ति। यत्र मृतजनः निवसतु तत्र मा किञ्चित् कष्टं भवतु।

वायुः पुनातु सविता पुनात्वग्नेर्भ्राजसा सूर्यस्य वर्चसा। विमुच्यन्तामुस्त्रियाः। ।4

तत्स्थानं वायुः पुनातु सविता शुद्धयतु, सूर्यस्य तेजसा पवित्रं भवतु। सूर्यस्य प्रकाशेन शुद्धयतु। बलीवर्दाः तत्स्थानशुद्धयर्थं शकटात् वियुक्ताः भवन्तु। तत्स्थानशुद्धयर्थं ये पवित्रकर्तारः देवाः सन्ति ते सर्वेऽत्र प्रार्थिताः वर्तन्ते।

NANDAKUMĀRA-CARITAM

of

Mahāmahopādhyāya Keśavarāmaśarma

With Sanskrit - Hindi - English - Commentary

श्रीमन्महामहोपाध्यायाभिनवकालिदासोपाधिप्रथिताचार्य-
केशवरामशर्मप्रणीतं

नन्दकुमार-चरितम्

(चम्पूकाव्यम्)

(संस्कृत-हिन्दी-अङ्ग्रेजी-भाषाव्याख्याभिः संवलितम्)

संस्कृतव्याख्याकारः
प्रो. रामसलाही द्विवेदी

अङ्ग्रेजीव्याख्याकारः
प्रो. वेदप्रकाश उपाध्यायः

आङ्ग्लानुवादकः
प्रो. कमलेशकुमारशर्मा

संस्कृतभावार्थकारः
डॉ. चक्रपाणिपोखरेलः

हिन्दीटीकाकारः
डॉ. देवेन्द्रप्रसादमिश्रः

© **All right reserved.** No part of this publication may be reproduced or transmitted in any form or by any means, electronic or mechanical, including photocopying, recording or any information storage or retrieval system, without prior permission in writing from the Publisher.

NANDAKUMĀRA-CARITAM (CAMPŪKĀVYAM)

ISBN : 978-93-89665-86-4

Published by :
CHAUKHAMBA SURBHARATI PRAKASHAN
(*Oriental Publishers or Distributors*)
K 37/117, Gopal Mandir Lane
Post Box No. 1129
Varanasi 221001 (India)
Tel. : +91 542 2335263, 2335264
e-mail : csp_naveen@yahoo.co.in
website : chaukhambasurbharatiprakashan@gmail.com
@chaukhambabooks
@chaukhambabooks

© **All Rights Reserved**
First Edition : 2021
₹ 1500.00

Distributor :
CHAUKHAMBA PUBLISHING HOUSE
4697/2, Ground Floor, Street No. 21-A
Ansari Road, Daryaganj
New Delhi 110002
Tel : +91 11 23286537, 41530947 (Mob.) +91 9811104365
e-mail : chaukhambapublishinghouse@gmail.com

*

Also can be had from :
CHAUKHAMBA SANSKRIT PRATISHTHAN
4360/4, Ansari Road, Daryaganj,
New Delhi - 110002

*

CHOWKHAMBA VIDYABHAWAN
Chowk (Behind Bank of Baroda Building)
Post Box No. 1069
Varanasi 221001

Printed by : A. K. Lithographer Delhi

नन्दकुमारचरितचम्पूकाव्यम्

अनुक्रमणिका

क्र.सं.	विषयः	लेखकः	पृ.सं.
●	स्वस्ति वाग्	स्वामी श्रीकार्ष्णि गुरुशरणानन्द जी महाराज	9-10
●	स्वस्तिवचनावलिः	पद्मविभूषण जगद्गुरु स्वामी श्रीरामभद्राचार्य जी महाराज	11-12
●	आशीर्वचांसि	महामण्डलेश्वर स्वामी श्री अवधेशानन्द गिरि जी महाराज	13
●	'नान्दीवाक्' एवं 'नन्दप्रशस्तिः'	प्रो. अभिराज राजेन्द्र मिश्र, 'पद्मश्री', पूर्व कुलपति	14-17
●	नन्दकाव्याभिनन्दनम्	प्रो. (डॉ.)रमाकान्त शुक्ल 'पद्मश्री'	18-23
●	श्रीनन्दकुमारमिश्र-नामाक्षरमाला	प्रो. मिथिला प्रसाद त्रिपाठी, पूर्व कुलपति	24-25
●	प्रास्ताविकम्	प्रो. रमेश कुमार पाण्डेय, कुलपति	26-27
●	शुभाभिशंसनम्	प्रो. जयकान्त सिंह शर्मा, पीठाध्यक्ष	28-29
●	शुभानुध्यानम्	प्रो.(डॉ.) अंजनी प्रसाद पाण्डेय	30
●	जयत्यसौ नन्दकुमारमिश्रः	स्वामी श्री ऋषिकुमार जी महाराज	31
●	शुभाभिमतिः	प्रो. विन्ध्येश्वरी प्रसाद मिश्र 'विनय'	32-34
●	शुभाशंसा	डॉ. मनोहरलाल आर्य	35-38
●	नैवेद्यम्	प्रो. भवेन्द्र झा, पूर्व कुलपति	39
●	कुर्वे शुभाशंसनम्	प्रो. मुरली मनोहर पाठक	40-41
●	श्रीनन्दकुमाराष्टकम्	प्रो.(डॉ.)तुलसीदास परौहा	42-43
●	शुभाभिशंसनम्	प्रो. माण्डवी शरण त्रिपाठी	44-45
●	संस्मरणम्	प्रो. गोकुल प्रसाद त्रिपाठी	46

श्रीवाचे नमः

श्रीमन्महामहोपाध्यायाभिनवकालिदासोपाधिप्रथिताचार्यकेशवरामशर्मप्रणीतं

नन्दकुमारचरितचम्पूकाव्यम्

अथ प्रथमोऽध्यायः

मूलनन्दकुमारचरितम्

गिरीश्वरसुतावरः स्मरहरः फणिस्रग्धरः
सुरोत्करधुरन्धरो विजयते स गङ्गाधरः।
चिता भुवनभूतये निजविभूतये येन वा
चितानलसमुज्ज्वला वसतये ध्रुवं काशिका।।

अन्वयः - गिरीश्वरसुतावरः स्मरहरः फणिस्रग्धरः सुरोत्करधुरन्धरः स गङ्गाधरः विजयते येन भुवनभूतये निजविभूतये वा चितानलसमुज्ज्वला काशिका ध्रुवं चिता।

व्याख्या - गिरीणामीश्वर= तस्य सुता= तत्सुता, तस्याः वरः=गिरीश्वरसुतावरः। स्मरः= कामदेवः, तस्य हरः=नाशकः, फणी = सर्पः स एव स्रक् इति फणिस्रक्= तस्याः धरः= फणिस्रग्धरः। सुराणामुत्करः=सुरोत्करः तेषु धुरन्धरः= सुरेषु सर्वोत्कृष्टः, गङ्गायाः धरः विलक्षणः कश्चिद्देवो विजयते= उत्कर्षमाप्नोति। इदानीं यत्पदेन तत्पदं परामृशते येन निजविभूतये= आत्मनः कान्त्यै, भुवनस्य कल्याणाय च